# मूल्यांकन के उद्देश्य

## Objectives of Evaluation

मूल्यांकन प्रक्रिया के उद्देश्य निम्न लिखित हैं —

सामान्य उद्देश्य — विशिष्ट उद्देश्य

### (1) सामान्य उद्देश्य

**अर्थ** — शिक्षा एक उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है। किसी भी शैक्षिक स्तर में विभिन्न विषयों की शिक्षा प्रदान की जाती है तथा सब का अपना-2 उद्देश्य होता है।

शिक्षा के सामान्य उद्देश्यों के निर्धारण में निम्न बातों पर ध्यान देना आवश्यक होता है।

1. छात्रों के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं आर्थिक पर ध्यान
2. समाज का आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, एवं धार्मिक आधार प्रदान कराना
3. छात्रों की क्षमता एवं शिक्षा का स्तर।

### (2) विशिष्ट उद्देश्य

Scanned with CamScanner

समाज की आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, प्रशासनिक आधार प्रदान कराना

③ छात्रों की क्षमता एवं शिक्षा का स्तर।

② विशिष्ट उद्देश्य

दैनिक शिक्षण कार्य करते समय अध्यापक के मस्तिष्क में सदैव कुछ तात्कालिक प्रमुख उद्देश्य होते हैं। जिनकी प्राप्ति कक्षा कार्य के दौरान सम्भव है, इसे उद्देश्य संकुचित / प्रत्यक्ष कार्यरूप होते हैं। ये व्यवहारिकता पर आधारित होते हैं इस अल्प अवधि में इनको प्राप्त किया जा सकता है।

③ शिक्षण बिन्दु

पाठ्यवस्तु के किसी भी प्रकरण को शिक्षण की सुविधा अनुसार छोटे-छोटे भागों में बांटा जाता है। इसे शिक्षण बिन्दु कहते हैं। इनके द्वारा विशिष्ट उद्देश्यों की प्राप्ति की जाती है।

④ अधिगम क्रियाएं

छात्रों के व्यवहार में परिवर्तन अधिगम परिस्थितियों के द्वारा लाया जाता है। अधिगम परिस्थिति + शिक्षण उद्देश्य के मिलन से छात्रों के व्यवहार के परिवर्तन लाया जा सकता है।

Topic 02 Kind of Evalution

मूल्यांकन के प्रकार

मिचेल स्क्रीवन (Mich...

Scri...

1. संरचनात्मक मूल्यांकन — Formative Evalution
2. योगात्मक मूल्यांकन — Summative Evalution
3. सतत मूल्यांकन — Continuous Evalution
4. व्यापक मूल्यांकन — Comprehensive Evalution

## 1 संरचनात्मक मूल्यांकन

अर्थ! संरचनात्मक मूल्यांकन वह है जब कोई शैक्षिक योजना अपन प्रारंभिक या निर्माणवादी अवस्था में हो और उसका मूल्यांकन कर उसमे सुधार किया जाता है उसे संरचनात्मक मूल्यांकन कहते है। किसी भी शैक्षिक योजना का मूल्यांकन जब उसकी प्रभावशीलता, गुणवत्ता तथा उपयोगिता को बढ़ाने के लिए किया जाता है वह संरचनात्मक मूल्यांकन कहलाता है जैसे — यदि किसी शोध योजना के प्रारूप का मूल्यांकन इस उद्देश्य से किया है कि उसे प्रस्तुत करने और उस पर क्रियान्वयन करने से पूर्व उसमे सुधार कर अधिक प्रभावशाली बनाया जाता है

पर निष्कर्ष निकालना कि सम्पूर्ण उसमें सुधार कर आवश्यक मानकता लाया जाता है।

## ③ योगात्मक मूल्यांकन

(Summative Evaluation)

**अर्थ** ! योगात्मक मूल्यांकन किसी शैक्षिक कार्यक्रम को अन्तिम रूप देने से उसे जारी रखने के पश्चात उसकी सामग्री की वांछनीयता को ज्ञात करने के लिये किया जाता है जैसे — एक अध्यापक को उच्च कक्षा को किसी विषय के लिए कोई एक पुस्तक बताने के और उसे उस विषय पर उपलब्ध अनेक पुस्तकों में से मूल्यांकन कर कोई एक पुस्तक उन्हें बताता है कि हो वह शिक्षक का यह मूल्यांकन योगात्मक मूल्यांकन कहलाता है।

## ③ सतत मूल्यांकन (Continuous Evalu-

**अर्थ** : " विद्यार्थियों के अधिगम की प्रक्रिया का निरन्तर और बार-बार मूल्यांकन को सतत मूल्यांकन कहते हैं। अधिगम की प्रक्रिया को अवधि में सतत मूल्यांकन का अर्थ अधिगम की कमियों का निदान परीक्षण और निराकरण करने

उसे सुधारा जाता है। अतः इससे स्पष्ट है कि बालक क्या जानता है

(ii) बालक क्या नहीं जानता है?

(iii) बालक अधिगम परिस्थिति में कठिनाइयाँ महसूस करे।

अतः सतत मू० विद्यार्थियों में सुधारात्मक प्रक्रिया और शिक्षण में सुधार के माध्यम से प्रतिपुष्टि प्रदान करता है।

(B) व्यापक मूल्यांकन

अर्थ = "व्यापक मू० शैक्षिक और सह शैक्षिक (सहगामी क्रियाओं) दोनों क्षेत्रों से विद्यार्थियों के विकास को इंगित करता है। शैक्षिक क्षेत्र से विषय से सम्बन्धित छात्र की समझ और उससे सम्बन्धित की जानकारी दी जाती है। सह शैक्षिक क्षेत्र में छात्र के सामाजिक, व्यक्तिगत गुणों का मनोवृत्ति, रुचि, दृष्टिकोण, भिन्नता एवं सामाजिक विशेषता का प्रसार, रुचियाँ, मनोवृत्तियाँ तथा मूल्य शामिल हैं।

Classification of Evaluation.

मूल्यांकन प्रक्रिया का वर्गीकरण

[illegible] प्रकार से किया गया है।

Scanned with CamScanner

... क्षेत्र से विषय से सम्बन्धित छात्र की समझ ... करता है।
की जानकारी हो जाती है। सह शैक्षिक क्षेत्र में छात्र से सम्बन्धित
मनोवृत्ति, रुचि, व्यक्तित्व, निपुणता एवं सामाजिक विशेषता और का
प्रसार, रुचियाँ, मनोवृत्तियाँ तथा मूल्य शामिल हैं।

## Classification of Evalution.

### मूल्यांकन प्रक्रिया का वर्गीकरण

मूल्यांकन प्रक्रिया का वर्गीकरण निम्न प्रकार से किया गया है।

(1) स्थानन मूल्यांकन (Placement of Evalution)

(2) संरचनात्मक मूल्यांकन (Formative Evalution)

(iii) नैदानिक मूल्यांकन (Diagnostic Evalution)

(iv) योगात्मक मूल्यांकन (Summative Evalution)

Scanned with CamScanner